Vol II Issue X

ISSN No : 2230-7850

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Indian Streams Research Journal

Executive Editor

Ashok Yakkaldevi

Editor-in-chief

H.N.Jagtap

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue.10,Nov. 2012
ISSN:-2230-7850
Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

भारतीय टेलीविजन समाचार चैनलों का सामाजिक एवं व्यावसायिक विश्लेषण

उमा त्रिपाठी,[1] धीरेन्द्र पाठक,[2] धरवेश कठेरिया शिवांजलि कठेरिया, सँदीप कुमार वर्मा [5]

[1]प्रोफेसर, संचार अध्ययन एवं शोध विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

[1]रीडर, संचार अध्ययन एवं शोध विभाग, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर (मध्य प्रदेश)

[3,5]सहायक प्रोफेसर, संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र)

[4]स्वतंत्र लेखक एवं शोध कार्य में संलग्न, वर्धा (महाराष्ट्र)

सारांश :

भारत में प्राइवेट टेलीविजन मीडिया के विस्तार को अभी दो दशक ही हुए हैं लेकिन जिस गति से इसका विकास हो रहा है। उससे ऐसा नहीं प्रतीत होता है कि दो दशक के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने जिस गति से समाचारों के प्रस्तुतीकरण के क्षेत्र में क्रांति लायी है। यह गति निश्चित ही कुछ पहलुओं को अगर छोड़ दिया जाए तो सराहनीय है। इन छुटे हुए पहलुओं में कहीं न कहीं विकास की इस अंधी दौड़ में मीडिया अपने सामाजिक दायित्वों को भूल गया है, ऐसा प्रतीत होता है। भारत में जिस तरह प्रिंट पत्रकारिता का आरंभ होता है और जिस तरह पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उसी भूमिका की उम्मीद स्वतंत्र भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से की जाती है कि मीडिया खुलकर समाज में व्याप्त दोषों के खिलाफ खुलकर लोहा ले। लेकिन, दुर्भाग्य! आज का मीडिया इस दिशा में कुछ महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है न ही मीडियाकर्मियों की भूमिका आज महात्मा गांधी, गणेश शंकर विद्यार्थियों, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे अनेक कलम के सिपाहियों की भांति नजर आती है। आज का मीडिया जो स्वयं को राष्ट्रीय मीडिया की श्रेणी में रखता है क्या वह सचमुच राष्ट्रीय मीडिया के गौरव के लायक है। इन्हीं सामाजिक दायित्वों कीं हकीकत की पड़ताल इस पत्र में विभिन्न आयामों के दृष्टिकोण से विश्लेषित करने की कोशिश की गयी है।

प्रस्तावना :

व्यावसायिकता, ग्लैमर और पॉप्युलारिटी की अंधी दौड़ के इस युग में टेलीविजन पत्रकारिता ने अपना वास्तविक अस्तित्व ही गिरवी रख दिया हैं। मिशन की जगह प्रोफेशन ने ले ली है और खादी के झोंलों और साइकिल को रीबोक (Reebok) के फैशनेविल एयर बेगस् और चमचमाती गाड़ियों के फ्रण्ट ग्लास पर लिखे 'प्रेस' ने रिप्लेस कर दिया हैं।

कलम की चमक अब कपड़ों की चमक के आगे फीकी पड़ गई है। पत्रकारों की सोच सीमित हो गई है। उनका पूरा ध्यान कुछ पावरफुल राजनीतिज्ञों, आला अफसरों तथा छुटभईया नेताओं की खबरें प्राथमिकता से छापकर उन्हें खुश करने में ही लगा रहता है। ताकि समय आने पर वे अपने बनाये गए संबंधों को भुना सकें। इन मुट्ठी भर लोगों के जन्मदिन पार्टी व उनके घर के पारिवारिक आयोजनों की कवरेज से पत्रकारों को फुरसत ही नहीं मिलती कि वे दूरदराज के गांवों में हो रहे गरीबों पर अत्याचार महिलाओं, पर बलात्कार, बच्चों की भूखमरी और कुपोषण के कारण हो रहीं मौतों की खबरों को तब्बजों दे सके। प्रायः खबरों के पीछे की सच्चाई उन तक पहुंच ही नहीं पाती क्योंकि घरों में अपने कपड़ों की सिलवटे ठीक करने की जद्दोजहद में वे प्रायः घटनास्थल पर तब पहुँचते है जब पूरी महाभारत खत्म हो चुकी होती है या फिर घटना के पीछे की सत्यता से वाकिफ होने के वाद भी उनकी असरदार कलम उसे पाठकों के सामने परोसने से इनकार कर देती है क्योंकि ज्यादातर घटनाओं के पीछे वही मुट्ठी भर लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े होते है जिनकी जी हजुरी कर अच्छे संबंध स्थापित करना आज के पत्रकारों की पत्रकारिता का एकमात्र ध्येय है।

इस स्थिति में वे घटनाओं और पीड़ित लोगों की सच्चाई समाज के सामने नहीं लाते हैं। और ला भी कैसे सकते हैं?जबकि उनको अच्छी तरह पता है कि अगर एक बार उनकी मार्केट इमेज खराब हुई तो उन्हे भविष्य के सुन्हरे अवसरों से हाथ धोना पड़ सकता है। खबरों को पूरी सच्चाई के साथ प्रकाशित करके वे छुटभईया नेताओं को नाराज करने का रिस्क नहीं उठा सकते क्योंकि वे उनकी मार्केट इमेज पर प्रतिकूल असर डाल सकतें है।

आज का संवाददाता इस असलियत से भी अच्छी तरह वाकिफ हैं कि उनकी एक चूक और उनका पूरा करियर दाँव पर, क्योंकि उन्हें रिप्लेस करने उनकी तरह के सौ रिपोर्टर कतार में खड़े है। इन परिस्थितियों में वो किसी घटना की गहराई और सच्चाई तक पहुँचने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाते है। अपने संवाददाताओं के सीमित कार्यक्षेत्र में रूचि या दखल होने की वजह से समाचार चैनलों की पहुँच भी सीमित हो गई है जो मीडिया जैसे मदमस्त हाथी को भी पंगु बना देती है। ऐसी स्थिति में आज के तथाकथित राष्ट्रीय चैनलों से राष्ट्रव्यापी तथा दूर दराज के गाँवों की खबरों की उम्मीद लगाना बेबुनियाद है। जब मीडिया का लक्ष्य केवल मनोरंजन करना और सूचना देना मात्र हो जाता है तब सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक धरातलो पर कई प्रकार की विकृतिया उभरने लगती है।

नतीजन, या तो ये 24X7 समाचार चैनलस् राजस्थान के किसी राजनेता की एएनएम कर्मी के साथ की गई काली करतूतों को चटकारी तस्बीरों के साथ परोसकर टीआरपी (टेलीविजन रेटिंग प्वाइंट) बढ़ाने की जी तोड़ कोशिश करते है या किसी सड़क हादसे में हुई मौतों व अस्पताल में दम तोड़ते घायलों की एक–एक कर बढ़ती सूची को ब्रेकिंग न्यूज लिखकर स्क्रीन पर डिसप्ले करते है।

कुछ चैनलस् ने तो समाचारों को पूरी सादगी, गंभीरता और सच्चाई के साथ दर्शकों तक पहुंचाने के अपने दायित्व का मजाक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। दर्शकों को अजीबोगरीब मेक–अप और गेट–अप के साथ बैठे महिला–पुरूष ज्योंतिषियों के सानिध्य से राशिफल या टेरो कार्ड द्वारा भविष्यफल बताने तक तो फिर भी ठीक था परन्तु अब इन चैनलों ने अलग–अलग इण्टरटेनमेन्ट चैनलों पर दिखाए जाने वाले सास–बहुओं के बीच की घटिया लड़ाईयों, जबरजस्ती के प्रेम–प्रसंगों के बनने या टूटने पर आधारित विषयहीन सीरियलों या राखी सावंत के बाद राहुल महाजन और राहुल के बाद रतन के असहनीय स्वमम्बरों की खतरनाक झलकियों से सजाकर पूरा सिग्मेन्ट दिखाना शुरू कर दिया है। अपने मुख्य चैनलों पर तो ये सीरियलस् झेल भी लिये जाते है क्योंकि चैनलस् बदलने के लिए रीमोट हमारे हाथ में ही होता हैं, परन्तु मुख्य समाचार चैनलों पर इन सीरियलों से चुरायी गई झलकियों के सिग्मेन्ट के साथ कौन सा ट्रीटमेन्ट किया जाए ये समझ से परे है।

यह कैसी विडम्बना है कि जिन बोरिंग और परी कथाओं वाले असलियत से परे सीरियलों से पीछा छुड़ाने के लिए और हकीकत की दुनिया से ताल्लुक कायम रखने के लिए दर्शक समाचार चैनलों की तरफ टकटकी लगाए देखते रहतै हैं, अब वहां भी उन्हें इन्हीं सीरियलों से रूबरू होना पड़ता हैं।

प्रश्न यह उठता है कि हमारा समाज भविष्य में क्या मूर्तरूप लेने जा रहा हैं?क्या हमारी पत्रकारिता का भी भावी स्वरूप निर्धारित होगा। उदारीकरण और बाजारवाद को लेकर कई तरह की भ्रान्तिया हैं। यह सही है पश्चिमी देशों के प्रभाव से और प्रौद्योगिकी के कारण कई सुविधाए हुई है।[4] इससे इंकार नही किया जा सकता है कि मीडिया को भी बाजार की जरूरत है। बाजार की गैर मौजूदगी में संचार का कोई भी माध्यम दीर्घकाल तक जीवित नहीं रह सकता हैं। क्या बाजारवाद ही मीडिया का दर्शन बन चुका[5] है?अगर यही सत्य है तो हिन्दुस्तान में 5 अख़बार निकलेंगे और वे सब बाजारीकरण को समर्पित अख़बार होंगे जो इस प्रतिस्पर्धा में जिंदा[6] रहेंगे।

एक गंभीर समाचार दर्शक के लिए वलगर और अश्लील कार्यक्रमों का समाचार के बीच में प्रसारण बर्दाश्त करना कठिन है। लेकिन समाचारों के बीच में प्रसारण बर्दाश्त और हजम करने वाली गोलिया बनाने में शायद दवा कम्पनियों को सदिया लग जाए परन्तु, इस बात की गारण्टी है कि जब भी ये गोलियां बन कर तैयार होगीं, बिकेंगी खूब।

पश्चिमी देशों पर जब इलेक्ट्रानिक मीडिया का हमला हुआ तो कमोवेश इस समाज में शिक्षा का एक स्तर था और लोग कम से कम 90 प्रतिशत और कहीं–कहीं शत–प्रतिशत साक्षर थे। वहां जब इसका हमला हुआ तो इसकी बुराइयां समाज ने झेल लीं। भारत में तो निरक्षरता का स्तर अब भी 40–50 प्रतिशत तक है, अब इलेक्ट्रानिक मीडिया का दुरूपयोग हो तो इसका नुकसान समाज पर क्यों नही होगा। इलेक्ट्रानिक मीडिया का असर अधिक गहरा होता है। तमाम लोग ऐसे हैं जो अख़वार पढ़ते नहीं, लेकिन, टेलीविजन जरूर देखते है। टीवी पर ऑफ दि रिकॉर्ड बातें नहीं पेश हो सकतीं।

आजकल एक चलन खूब चल निकला है दस मिनिट में सौ या बीस मिनिट में दो सौ खबरों के बुलेट समाचारों का। एक ही घटना और एक ही बैक ग्राउण्ड की खबर पॉच छः खण्डों में तोड़ कर हाई पिच, लड़खड़ाती और अस्पष्ट आवाजों से बुलेट की तेजी के समान पेश करने को, बुलेट न्यूज की संज्ञा दी जा रही है। ये ऐसी खबरे होती है जो न तो खुद पूरी होती है और न दर्शकों तक स्पष्ट रूप में पहुँच पाती है। स्पीड न्यूज समाचार विश्वसनीयता की दृष्टि से बहुत हद तक महत्वपूर्ण न समझे जाने वाले समाचार हैं। ये समाचार केवल घटना, कार्यक्रम, आयोजन आदि के संबंध में आंशिक सूचना के स्रोत हैं।

प्रभावः

समाचार एक शक्ति हैं, पत्रकारिता को चौथे स्तंभ की संज्ञा आखिर यू ही तो नहीं दे दी गई है। मीडिया के दायित्व और उनके निर्वाहन का कार्य महात्वपूर्ण होने के साथ–साथ राष्ट्र हित से भी जुड़ा है। मीडिया द्वारा अपनी इस जिम्मेदारी का निर्वाहन ईमानदारी से नहीं किये जाने के कारण ही मीडिया पर प्रश्न खड़े होते रहे है और वर्तमान में भी यही स्थिति है। इनमें इलेक्ट्रोनिक माध्यम जितना प्रभावी है उतनी ही इसकी विश्वसनीयता को शक के दायरे में रख कर देखा जाने लगा है। बाजारीकरण के बढ़ते दबाव और प्रतिस्पर्धा के कारण सवसे पहले और सबसे तेज की दौढ़ में कहीं न कहीं राष्ट्रीय समाचार चैनलों को अपने मूल उद्देश्य समाचारों को सत्य और गंभीरता से प्रस्तुत करने के जुमले को गलत सावित कर रहे हैं। बाजारीकरण के दबाव ने आज पेड न्यूज का चलन बढ़ा दिया है। इस कारण टेलीविजन न्यूज चैनल पर दिखाये जा रहे समाचार, समाचार है या विज्ञापन आम दर्शक की समझ में नहीं आता है। इस कारण वह विश्वसनीयता के साथ विज्ञापन को भी समाचार समझ लेता है। यह सच है कि चैनलों की प्रतिस्पर्धा के कारण समाचारों की विश्वसनीयता में तेजी से कमी देखी जा सकती है। प्रश्न यह उठता है कि एक आम दर्शक आज भी समाचार और पेड न्यूज में अंतर करने में असमर्थ है क्योंकि उसकी माध्यमों की प्रति विश्वसनीयता आज भी बरकरार है इससे पहले बहुत देर हो जाए संचार माध्यमों को अपनी विश्वसनीयता को बनाए रखने हेतु समाचारों में पारदर्शिता और विश्वसनीयता बनाये रखनी होगी। तभी राष्ट्रीय समाचार चैनलों का दायित्व पूर्ण होगा जो कि एक माध्यम होने के नाते राष्ट्र और लोकहित में उनका दायित्व बनता है।

निष्कर्षः

राष्ट्रीय समाचारों के नाम पर उत्तर प्रदेश, हरियाण, राजस्थान या बिहार जैसे अंचल में बच्चा ना होने की वजह से किसी निर्दोष महिला को उसके शराबी पति के द्वारा प्रताड़ित कर घर से निकाले जाने या फिर पाकिस्तानी बदनाम बाला वीना मलिक के सेट से अचानक गुम हो जाने और तीन दिन बाद मुम्बई के किसी होटल में पाये जाने जैसी नुक्कड़ी, मसालेदार खबरों को ही राष्ट्रीय समाचार चैनलों पर प्रदर्शित कर के ही आज की पत्रकारिता और मीडिया के प्रतिनिधि 'सबसे तेज', 'खबर हर कीमत पर' और 'सच बोलने का साहस और सलीका' जैसे आकर्षक पंच लाईनों का दंम भर कर खुद को राष्ट्रीय समाचार चैनलों की श्रेणी में में श्रेष्ठ साबित करने की भी हुंकार भर रहे हैं। वर्तमान समाय में मीडिया अपनी विश्वसनीयता को कम कर रहा है इसका मुख्य कारण तेज और सबसे आगे बनने के चलते समाचारों के प्रस्तुतीकरण में जल्दबाजी देखने को मिल रही है जिसके कारण कई बार समाचार चैनलों को माफी तक मांगनी पड़ी है। यह पत्रकारिता के हित में कदापि उचित नहीं है। इस कारण समाचारों में विश्वसनीयता का विशेष ध्यान रखना चाहिए। समाचार चैनलों को राष्ट्र निर्माण और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाहान गंभीरता और इमानदारी पूर्वक करना चाहिए। समाचारों के प्रस्तुतीकरण में देश की संस्कृत, सामाजिक मुद्दे, कानून और न्याय व्यवस्था, स्वस्थ राजनीति, राष्ट्रीय विकास के मुद्दे एवं सामाजिक चुनौतियां, मनोरंजन आदि ऐसे अनेक विषय हैं जिनका संतुलित प्रस्तुतीकरण समाचारों में किया जाना बेहद आवश्यक है। तभी राष्ट्रीय समाचार चैनल अपने राष्ट्रीय दायित्व की भूमिका के समानांतर स्थापित हो सकगें।

सीमाएः

किसी भी संचार माध्यम का उद्देश्य सुचनाओं के आदान–प्रदान से हटकर नहीं हो सकता है। लेकिन जिस तरह वर्तमान मीडिया बाजारीकरण के दबाव में अपने मूल उद्देश्यों को भूलती जा रही है यह किसी भी रूप में राष्ट्र और राष्ट्र में निवासरत नागरिकों के हित में नहीं है।

पिछले कुछ समय से जिस प्रकार मीडिया ने खास तौर पर इलेक्ट्रानिक समाचार चैनलों ने अपनी सीमाओं को लांघकर काम किया है वह कतई ही मीडिया के उद्देश्य और समाज के हित में नहीं है। मीडिया को अपनी सीमाए तय करनी चाहिए जिससे किसी नागरिक को परेशानियों का सामना ना करना पड़ें। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने पिछले कुछ दिनों में समाज के हर क्षेत्र में अपना हस्तक्षेप किया है जो कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन है। टीआरपी और सवसे तेज और आगे बनने के चक्कर में किसी को भी षड़यंत्रकारी बनाने स्टिंग आपरेशन का दुरूप्योग, आदलती कार्यवही के नतीजे आये बिना अपराधी या निर्दोश घोशित करना, किसी का भी पैसे लेकर महिमा–मंडन करना, किसी व्यक्ति या संस्था के विज्ञापन को समाचार के रूप में प्रस्तुत करना आदि ऐसे अनेक विशय है जो कि वर्तमान में मीडिया के द्वारा उठाये तो जा रहे है लेकिन उनका उद्देश्य चैनलों का अपना लाभ कमाना है ना कि समाज और राष्ट्र हित। इलेक्ट्रानिक मीडिया समाचार चैनलों को कहीं न कहीं अपनी इन नीतियों पर विचार करने की आवश्यकता है क्योकि संचार माध्यमों का उद्देश्य समाचार हित में होना चाहिए ना कि स्वयं के लाभ कमाने के हित में संचार माध्यमों को स्वयं अपनी आचार–संहिता का निर्माण कर उनका पालन करना चाहिए जो मीडिया के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए समाज और राष्ट्र के हित में हों।

आवश्यक सुझावः

राष्ट्रीय मीडिया यानी राष्ट्रीय टेलीविजन समाचार चैनल और जब राष्ट्रीय टेलीविजन समाचार चैनल है तो उसके दायित्व भी राष्ट्रीय जिम्मेदारियों के हिसाब से ही होने चाहिए। लेकिन यह सच दूर–दूर तक नजर नहीं आता है। राष्ट्रीय मीडिया या टेलीविजन चैनल वर्तमान समय में केवल कुछ बड़े शहरों खासकर मैट्रो शहरों या फिर जहां से समाचार प्राप्त कना सरल है वहीं तक सीमित होकर रह गये है। इस तथ्य के कुछ खास कारण भी देखे जा सकते हैं। मेट्रो शहरों से समाचार प्राप्त करना लगभग सभी समाचार चैनलों के लिए आसान है इस कारण इन शहरों के समाचारों की अधिकता रहती है इसी लिए बड़े शहरों के छोटे–छोटे समाचार भी राष्ट्रीय समाचारों में शामिल कर लिए जाते हैं। समाचारों की कमी होने पर भी फिलर के रूप में आस–पास के क्षेत्रों से ही समाचार लिए जाते हैं। इन समाचारों को प्राप्त करने में कम समय और लागत आती है। दूसरी तरफ लगभग सभी समाचार चैनलों ने अपने मुख्यालय बड़े शहरों में ही स्थापित किये हैं यह भी एक मुख्य कारण है। 24 घण्टे समाचार दिखाने के लिए हर समय कुछ न कुछ चाहिए रहता है इस कारण भी आस–पास के समाचारों का महत्व अधिक वड़ जाता है। सबसे पहले और सबसे तेज इंही समाचारों को दिखाकर चैनल अपना रास्ता बनाते है। क्योंकि इन समाचारों को प्राप्त करना भी आसान होता है। चैनलों को आवश्यकता इस वात कि है कि चैनल स्वयं को राष्ट्रीय समाचार चैनल मानते है इस कारण उन्हें पूरे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करना चाहिए। केवल मेट्रो शहरों के समाचारों को ही प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए। समाचार चैनल राष्ट्र के प्रहरी और जनमानस की सोच निर्माण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है इस कारण उन्हें तर्क और न्याय संगत समाचारों को ही देना चाहिए। तभी वह अपने राष्ट्रीय दायित्व का निर्वाहन बखूवी कर पायेगे।

संदर्भः

1.मीडिया और बाजार बाद, रामशरण जोशी, पृष्ठ क्रमांक 16, प्रकाशक– राधा कृष्ण दिल्ली।
2.वही, पृष्ठ क्रमांक 43.
3.वही, पृष्ठ क्रमांक 51.
4.वहीं, पृष्ठ क्रमांक 17.
5.वहीं, पृष्ठ क्रमांक 15.
6.वही, पृष्ठ क्रमांक 44.
7.पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा, आलोक मेहता, पृष्ठ क्रमांक 30–31, प्रकाशक– सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.

सहायक संदर्भ ग्रंथः

1.सूचना क्रांति की राजनीति और विचारधारा, धूलिया सुभाष, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2001.
2.नए जनसंचार माध्यम और हिंदी, सुधीश पचौरी, अचला शर्मा, प्रकाशक– राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली, 2002.
3.टेलीविजन एण्ड पापुलर कल्चर इन इंडिया, आनंद मित्रा, प्रकाशक– सेज पब्लिकेशन, दिल्ली, 1993.
4.टेलीविजन पत्रकारिता, ओमकार चौधरी, प्रकाशक–हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला, 2002.
5.मैकब्राइड सीन, मेनी वायसेज, वन वर्ल्ड, कंयुनिकेशन एंड सोसाइटी टुडे एंड टुमौरो, प्रकाशक– यूनेस्को, पेरिस, 1980.
6.टेलीविजन समीक्षाः सिद्धांत और व्यवहार, सुधीश पचौरी, प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
7.माध्यम साम्राज्यवाद, जगदीश्वर चतुर्वेदी, प्रकाशक– अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.लि.), नई दिल्ली, 2002.
8.टेलीविजन समाचार लेखन और वाचन, एचएच मुस्तफा जैदी, प्रकाशक–सुलभ प्रकाशन, लखनउ, 2001.
9.संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र, रेमंड्स विलियम, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2000.
10.पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा, आलोक मेहता, प्रकाशक–सामाजिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2005.
11.पूंजीवाद और सूचना का युग, (भूमण्डलीय संचार क्रांति की राजनीतिक अर्थ व्यवस्था), मैक्वेस्नी रॉबर्ट डब्ल्यू., वुड इलेन मिकसिंस, फॉस्टर जॉन बेलेमी (संपादक), शर्मा राजेंद्र (अनुवादक), प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन, दिल्ली, 2006.
12.आर्थिक पत्रकारिता, आलोक पुराणिक, प्रकाशक– प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2007.
13.जनसंचार के सामाजिक संदर्भ, जवरीमल पारख, प्रकाशक– अनामिका पब्लिकेशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर (प्रा.लि.), नई दिल्ली, 2001.
14.एंकर रिपोर्टर, पुण्य प्रसून वाजपेयी, सहलेखक, प्रभात रंजन प्रकाशक–राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
15.उत्तर आधुनिक मीडिया विमर्श, सुधीश पचौरी, प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
16.इंडिया ऑफ माइ ड्रीस, मोहनदास गांधी, प्रकाशक– नवजीवन पब्लिसिंग हाउस, अहमदाबाद, 1947.
17.दूरदर्शन विकास से बाजार तक, सुधीश पचौरी, प्रकाशक– प्रवीण प्रकाशन, दिल्ली 2000.
18.आधुनिक विज्ञापन, डॉ.प्रेमचन्द पातंजलि, प्रकाशक– वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
19.सुनील कुकरेती, मेरा गांव मेरा देश, दैनिक भास्कर, नवरंग, परिशिष्ट, भोपाल, मध्य प्रदेश, 05 दिसम्बर, 2009.
20.सुधीश पचौरी, हमारा आईना है टीवी, कादम्बिनी, सितम्बर, दिल्ली, 2009.
21.हंस, टेलीविजन विशेशांक, जनवरी, प्रकाशक–अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली, 2007.
22.देव चौधरी, ब्रांड का बाजार, दैनिक भास्कर, रसरंग परिशिष्ट, भोपाल, 14 नबम्वर, 2004.

23.शुचि बंसल, वदलाव बना ब्रांड, बिजनेस स्टैंडर्ड, भोपाल, मध्य प्रदेश, 07 अप्रैल, 2009.
24.पीसी जोशी, कमेटी रिपोर्ट–1986, एन इंडियन पर्सनैलिटी फॉर इंडियन टेलीविजन।
25.इम्पैक्ट, प्रकाशक–एक्सचेंज फॉर मीडिया ग्रुप पब्लिकेान, मुंबई।
26.द एडवर्टाइज़िंग स्टैंडर्ड कौंसिल ऑफ इंडिया।
27.FICCI- KPNG, Report 2011.
28.www. indiantelivision.com
29.www. deloitte.com/in
30.www. pitchonnet.com
31.www. tvguide.com
32.www. ecxchange4media.com
33.www. ascionline.org
34.www. tamindia.com
35.www. mediaimpact.org

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net